ज्ञान की राजनीति पुस्तकमाला–4

युवा ज्ञान शिविर

21–22 जुलाई 2007
विद्या आश्रम, सारनाथ, वाराणसी

कार्यक्रम, पर्चों के सारांश और भागीदार

❖

आयोजक

ज्ञान मुक्ति मंच, वाराणसी

पुस्तक का नाम : **युवा ज्ञान षिविर**

वर्ष : 2008

सहयोग राशि : रू. 10/–

सम्पादन एवं प्रकाशन : डा. चित्रा सहस्रबुद्धे द्वारा विद्या आश्रम, सारनाथ, वाराणसी की ओर से

अक्षर संयोजन : एफिशिएन्ट प्रिन्टर्स, कचहरी, वाराणसी

मुद्रक : सतनाम प्रिन्टर्स, पाण्डेयपुर, वाराणसी

सम्पर्क : विद्या आश्रम, सा 10/82 ए, अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी–221007

फोन : 0542–2595120

वेब साइट : vidyaashram.org

ज्ञान की राजनीति

सन् 1990 से पूरी दुनिया में एक परिवर्तन का दौर चल रहा है। सूचना उद्योग का विकास, निजीकरण, बाजार, मीडिया और मनोरंजन, जैविक खेती, शहरों का पुनर्संगठन, वैश्वीकरण, अमेरिका की दादागिरी इत्यादि कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु हैं जिनके मार्फत इस परिवर्तन को समझा जा सकता है।

सूचना उद्योग ने ज्ञान की नई परिभाषा दी है और यह कहा जा रहा है कि इस परिवर्तन के मार्फत एक ज्ञान आधारित समाज बन रहा है। विज्ञान की सिरमौर स्थिति टूट गई है। इंटरनेट का बोलबाला बढ़ा है। इससे सार्वजनिक क्षेत्र में लोकविद्या को फिर से पहचान मिली है।

ज्ञान और विकास की बातें कारीगरों, किसानों, मजदूरों, महिलाओं, मध्यम वर्गों, छोटा–छोटा धन्धा करने वालों और आदिवासियों के लिये भुलावा साबित हो रही है। ये सब लोग पुख्ता ज्ञान और कौशल रखते हैं। लेकिन एक तरफ इस ज्ञान पर कम्प्यूटर–इंटरनेट द्वारा कब्ज़ा किया जा रहा है और दूसरी ओर इस ज्ञान के आधार पर उत्पादित वस्तुओं को बाजार में दाम नहीं मिलता। इस तरह गरीब किंतु ज्ञानी समाज के ज्ञान पर कब्जा किया जा रहा है और उसका शोषण हो रहा है। लोकविद्या, साइंस और इंटरनेट सभी के ज्ञान पर नये उद्योगपतियों और वित्तीय पूँजी के मालिकों का कब्जा है।

सभी राजनीतिक पार्टियाँ उसी विकास के आदर्श को मानती हैं जिसमें गरीबी दूर करने का कोई रास्ता नही है उल्टे जो गरीबों के शोषण पर ही आधारित होता है। ज़रूरत एक ऐसे परिवर्तन की राजनीति की है जो गरीबों के हितों को सर्वोपरि रखे। यह तभी संभव है जब एक नई परिवर्तन की राजनीति खड़ी हो। यह ज्ञान की राजनीति होगी।

ज्ञान की राजनीति के विचार को सबके सामने रखने के लिये और उस पर सार्वजनिक बहस छेड़ने के लिये चार पुस्तकों की यह पुस्तक–माला बनाई गई है। ये पुस्तकें हैं–

1. **बौद्धिक सत्याग्रह**
2. **लोगों के हित की राजनीति और ज्ञान का सवाल**
3. **ज्ञान मुक्ति आवाहन**
4. **युवा ज्ञान शिविर**

ज्ञान मुक्ति दर्शन

ज्ञान मुक्ति दर्शन के कुछ मूल्य निम्नलिखित हैं–

1. ज्ञान उद्योग नही है।
2. ज्ञान मुनाफा कमाने के लिये नही है।
3. ज्ञान किसी की निजी सम्पत्ति नही है।
4. ज्ञान शोषण का साधन नही है।
5. ज्ञान का शोषण मानवता के प्रति अपराध है।
6. ज्ञान मनुष्य और समाज के पुनर्निर्माण का साधन है।
7. ज्ञान समाजहित की धरोहर है।
8. ज्ञान मनुष्य की जीविका का साधन है।
9. ज्ञान मनुष्य और समाज की शक्ति और मुक्ति का स्रोत है।
10. ज्ञान की सभी धारायें बराबर के सम्मान की हकदार हैं।

•

लोकविद्या और सामाजिक परिवर्तन

मनुष्य का जीवन निर्धारित करने में विद्या की भूमिका शायद हमेशा ही सबसे अधिक रही है, धर्म और राज्य से भी अधिक। विद्या में मनुष्य का आधार होता है, उसकी पहचान होती है। विद्या ही मनुष्य को मुक्ति का मार्ग देती है और इसी के जरिये वह अपनी जीविका भी चलाता है। समाज की गति, लोगों के आपसी सम्बन्ध और उनमें बदलाव के आधार भी मनुष्य की विद्या में होते हैं। अन्याय के खिलाफ संघर्ष और शोषण के प्रतिरोध तथा सामाजिक परिवर्तन की चेतना सभी को विद्या में अपना आधार ढूँढ़ना पड़ता है। एक वाक्य में कहें तो विद्या मनुष्य की सक्रियता का वह रूप है जिसे मनुष्य से अलग नहीं किया जा सकता।

अगर लोगों के मन का और सबके लिये न्याय का समाज बनना है तो उसे आम लोगों की सक्रियता पर ही आधारित होना होगा और इस सक्रियता का आधार उनकी अपनी विद्या में ही हो सकता है। किसानों, कारीगरों, छोटे–छोटे दुकानदारों, महिलाओं और आदिवासियों के पास जो विद्या है उसे लोकविद्या कहते है। लोकविद्या के आधार पर खड़ी हुई राजनीति आज तक की सबसे साफ राजनीति होगी। धर्म और पूँजी के बल पर खड़ी राजनीति इसके सामने टिक नही सकेगी। लोकविद्या में जमाने की आस्था जागृत करना और लोकविद्या धारक समाज में अपनी विद्या की असीम शक्ति के प्रति विश्वास पैदा करना आज क्रांतिकारी सामाजिक परिवर्तन की पहली शर्त है।

●

ज्ञान मुक्ति मंच

21 वीं सदी की शुरूआत के साथ औद्योगिक युग समाप्त हो चुका है और सूचना युग शुरू हुआ है। कहा जा रहा है कि एक ज्ञान आधारित समाज बन रहा है। हम देख रहे हैं कि इस युग में सूचना उद्योग (टी.वी., मोबाइल,कम्प्यूटर–इन्टरनेट आदि) सबसे तेजी से फल–फूल रहे हैं। छोटे–छोटे उद्योग–धन्धे और खेती उजड़ रहे हैं और इनसे जुड़े लोग आत्महत्या कर रहे हैं। जो युवक कम्प्यूटर–इन्टरनेट पर बहुत कुशलता के साथ अंग्रेजी में काम कर रहे हैं केवल उन्हें ही मोटे वेतन मिल रहे हैं और शेष नौजवानों के लिए सम्मान लायक रोजगार के रास्ते बन्द होते जा रहे हैं। निम्नलिखित बातें विषेशरूप से ध्याान देने योग्य हैं।

- ज्ञान आधारित सूचना युग में शिक्षा महंगी है। यानि सामान्य लोगों से ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार छीना जा रहा है।

- ज्ञान आधारित सूचना युग में ज्ञान की ज्यादातर गतिविधियाँ कम्प्यूटर–इन्टरनेट पर होने जा रही हैं और वे अंग्रेजी में हैं। यानि कम्प्यूटर का ज्ञान आम जनता की पहुँच से बाहर है।

- ज्ञान आधारित सूचना युग में लोकविद्या (किसानी, कारीगरी, वान्यिकी, स्वास्थ्य रक्षा, पालन–पोषण आदि लोक आधारित ज्ञान) को कम मूल्य दिया जा रहा है। यानि आम लोगों के पास जो ज्ञान है उसका शोषण हो रहा है।

- ज्ञान आधारित सूचना युग में लोकविद्या पर कब्जा किया जा रहा है। पेटेन्ट बनाकर और कम्प्यूटर में संग्रहित कर लोकविद्या पर पूँजीपतियों का कब्जा स्थापित हो रहा है।

- ज्ञान आधारित सूचना युग में शिक्षा, बाजार, प्रशासन और सेवा (डाक, बैंक, पुस्तकालय, खबरें, शोध, सूचना आदि) कम्प्यूटर–इन्टरनेट पर स्थानांतरित हो रहे हैं। यानि सार्वजनिक व्यवस्थायें गरीब समाज से दूर हो रही हैं।

कहने को तो यह ज्ञान आधारित सूचना युग है किन्तु वास्तव में यह ज्ञान पर कब्ज़े और उसके शोषण पर आधारित सूचना युग है। इसलिए आम आदमी की जिन्दगी जीने के लायक बने, समाज में न्याय की स्थापना हो और सभी नौजवानों को आगे बढ़ने के मौके मिलें इसकी पहली शर्त है कि ज्ञान को पूँजीपतियों के कब्जे से और शोषण से मुक्त किया जाय। इसी के लिए ज्ञान मुक्ति मंच बनाया गया है ।

ज्ञान मुक्ति मंच की प्रमुख माँगें निम्नलिखित हैं –

- कम्प्यूटर हिन्दी में हो।
- गाँव–गाँव में मीडिया स्कूल हो।
- घर–घर में उद्योग हो।
- स्थानीय बाजार को संरक्षण हो।
- लोकविद्या को शिक्षा में शामिल किया जाय।
- उच्च शिक्षा के दरवाजे सबके लिए खुले हों।

ज्ञान मुक्ति मंच जगह–जगह पर नौजवानों के ज्ञान शिविर चलाकर इस विषय पर नौजवानों को नई समझ से लैस कर रहा है। जून 2007 में विद्या आश्रम पर हुये युवा ज्ञान शिविर में प्रस्तुत पर्चों के सारांशों पर यह पुस्तिका बनाई गई है। इन ज्ञान शिविरों में क्या होता है इसकी जानकारी इस पुस्तिका से मिलती है।आगे बढ़कर हिस्सा लें। इन ज्ञान शिविरों में आगे बढ़कर हिस्सा लें।

संचालन समिति, ज्ञान मुक्ति मंच,

विद्या आश्रम, अशोक मार्ग ,सारनाथ ,वाराणसी।
फोन : 2595120

कार्यक्रम

दिन : शनिवार, 21 जुलाई 2007

क्रम	समय	विषय	वक्ता
1.	10.00	पंजीकरण	
2.	10. 30	स्वागत और परिचय	
3.	11.00	विषय प्रवेश : ज्ञान की चर्चा क्यों और कैसी ? शिविर के उद्देश्य	सुनील सहस्रबुद्धे
4.	11.30	शिविर का संगठन	संतोष कुमार संविज्ञ
5.	12.00	प्रथम सत्र : ज्ञान और शिक्षा	
		• शिक्षा वही जो ग़ैर–बराबरी दूर करे • ज्ञान के क्षेत्र में उथल–पुथल	लक्ष्मण प्रसाद डा.चित्रा सहस्रबुद्धे
6.	12.30	खुली चर्चा	
7.	1.30	भोजन	
8.	2.30	दूसरा सत्र : ज्ञान और रोजगार	
		• ज्ञान और कृषि • ज्ञान और उद्योग • ज्ञान और नये उद्योग • ज्ञान और मीडिया	रामजनम, डा.रघुवंश मणि लक्ष्मण प्रसाद अविनाश झा दिलीप कुमार , राकेश कुमार सिंह
9.	5.00	खुली चर्चा	

2

दिन : रविवार , 22 जुलाई 2007

1.	10.30	तीसरा सत्र : कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल और ज्ञान का सवाल	
		● कम्प्यूटर और उससे जुड़े सवाल ● ज्ञान व लोकविद्या के नवीनीकरण के स्थानः मीडिया, इंटरनेट, बाजार और शिक्षा	संतोष कुमार डा. चित्रा
2.	1.00	भोजन	
3.	2.30	चौथा सत्र : ज्ञान मुक्ति मंच ● विचार और विस्तार ● कार्य , कार्यक्रम और कर्तव्य	दिलीप कुमार संतोष कुमार
4.	5.00	समापन	

आवाहन

मेडिकल और इन्जीनियरिंग के कब्ज़े से
शिक्षा को मुक्त करो।

●

शिक्षा ऐसी हो जो गैर–बराबरी दूर करे।

●

ज्ञान को पूँजीपतियों के कब्ज़े से मुक्त करो।

3

शिविर में चर्चा के मुद्दे

पहला दिन, 21 जुलाई

विषय प्रवेश—ज्ञान की चर्चा क्यों? **सुनील सहस्रबुध्दे**

1— परिवर्तन का दौर

2— ज्ञान की बात

3— गरीब समाज का भविष्य

4— परिवर्तन की राजनीति

पहला सत्र

शिक्षा वही जो गैर—बराबरी दूर करे **लक्ष्मण प्रसाद**

1— शिक्षा का संगठित व असंगठित रूप

2— विद्या की प्रतिष्ठा

3— गैर—बराबरी का सवाल

4— सभी ज्ञान के बीच बराबरी का आधार

5— शिक्षा में लोकविद्या समाहित हो

ज्ञान के क्षेत्र में उथल—पुथल **चित्रा सहस्रबुद्धे**

1— सूचना ही ज्ञान और पूँजी बनी

2— ज्ञान प्रबन्धन, साइंस और लोकविद्या

3— ज्ञान के प्रकारों में ऊँच—नीच

दूसरा सत्र

ज्ञान और खेती **रामजनम**

1– कृषि–ज्ञान के स्तर

2– कृषि–ज्ञान का पूँजी और सत्ता से रिश्ता

3– किसान के ज्ञान व उत्पादन का अवमूल्यन

4– किसान के ज्ञान पर कब्जा तथा व्यापार

5– कम्प्यूटर में किसान के ज्ञान का संकलन

6– किसान के ज्ञान का तिरस्कार

ज्ञान और उद्योग **लक्ष्मण प्रसाद**

1– स्थानीय उद्योग और कारीगर

2– लोकपक्ष

3– पूँजी का ज्ञान पर कब्जा

4– उद्योग में ज्ञान का आपसी सम्बन्ध

ज्ञान और मीडिया **दिलीप कुमार**

1– अर्ध चेतन मीडिया : एक तरफा संप्रेषण

2– वैकल्पिक मीडिया की आवश्यकता

3– वैकल्पिक मीडिया के मूल्य

- स्थानीय भागीदारी
- स्थानीय उद्यमिता

4– वैकल्पिक विकास के मूल्यों का प्रचार

दूसरा दिन , 22 जुलाई

पहला सत्र

लोकविद्या (ज्ञान) के संगठन व नवीनीकरण के नये स्थान — **चित्रा सहस्रबुद्धे**

1. मीडिया
2. कम्प्यूटर–इंटरनेट
3. बाजार
4. शिक्षा

दूसरा सत्र

ज्ञान मुक्ति मंच

1– विचार का विस्तार — **दिलीप कुमार**

2– कार्य, कार्यक्रम और कर्तव्य — **संतोष कुमार**

6

❁ज्ञान की चर्चा क्यों और कैसे ?

–सुनील सहस्रबुद्धे

1. परिवर्तन का दौर

सन् 1990 से पूरी दुनिया में एक परिवर्तन का दौर चल रहा है। सूचना उद्योग का विकास, निजीकरण, बाजार, मीडिया और मनोरंजन, जैविक खेती, शहरों का पुनर्संगठन, वैश्वीकरण, अमेरिका की दादागिरी इत्यादि कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु हैं जिनके मार्फत इस परिवर्तन को समझा जा सकता है।

2. ज्ञान की बात

सूचना उद्योग ने ज्ञान की नई परिभाषा दी है और यह कहा जा रहा है कि इस परिवर्तन के मार्फत एक ज्ञान आधारित समाज बन रहा है। ज्ञान की शब्दावली का प्रयोग बहुत बढ़ गया है। विज्ञान की सिरमौर स्थिति टूट गई है। इंटरनेट व डाटा बेस का बोलबाला बढ़ा है। इससे सार्वजनिक क्षेत्र में लोकविद्या को फिर से पहचान मिली है। लेकिन लोकविद्या, साइंस और इंटरनेट सभी के ज्ञान पर नये उद्योगपतियों और वित्तीय पूँजी के मालिकों का कब्जा है। इस कब्जे के चलते ज्ञान और ज्ञान–प्रबन्धन के बीच संघर्ष है। ज्ञान आधारित समाज को ज्ञान–प्रबन्धन और वित्तीय पूँजी का गुलाम बनाया जा रहा है।

3. गरीब समाज का भविष्य

ज्ञान और विकास की बातें कारीगरों, किसानों, मजदूरों, महिलाओं, छोटा–छोटा धन्धा करने वालों और आदिवासियों के लिये भुलावा साबित हो रही है। स्कूल और कालेज तो खूब खुले हैं लेकिन गरीब घरों के नौजवानों के लिये इनमें कोई स्थान नही है। काम करने वालों की आमदनी घट रही है और बस्तियाँ उजाड़ी जा रही है। किसान और कारीगर पुख्ता ज्ञान और कौशल रखते हैं। लेकिन एकतरफ इस ज्ञान पर कम्प्यूटर–इंटरनेट द्वारा कब्ज़ा किया जा

रहा है और दूसरी ओर इस ज्ञान के आधार पर उत्पादित वस्तुओं को बाजार में ढंग का दाम नहीं मिलता। इस तरह गरीब किंतु ज्ञानी समाज के ज्ञान पर कब्जा किया जा रहा है और उसका शोषण हो रहा है। उनके बच्चों को आधुनिक एवं उच्च शिक्षा से वंचित रखा जा रहा है। इस अवस्था का हमारे पास क्या जवाब है?

4. परिवर्तन की राजनीति

राजनीतिक पार्टियाँ आम आदमी के लिये थोडा बहुत मरहम–पट्टी और कभी–कभी कष्ट में थोड़ी राहत से ज्यादा कुछ नही करती हैं। सभी पार्टियाँ उसी विकास के आदर्श को मानती हैं जिसमें गरीबी दूर करने का कोई रास्ता नही है उल्टे जो गरीबों के शोषण पर ही आधारित होता है। जरूरत एक ऐसे परिवर्तन की राजनीति की है जो गरीबों के हितों को सर्वोपरि रखे। यह तभी संभव है जब ज्ञान की मुक्ति के लिये संघर्ष किये जायें। इस संघर्ष के ज्ञान को हम परिवर्तन का ज्ञान कहते हैं। यह शिविर परिवर्तन के ज्ञान से आपका परिचय करायेगा।

•

शिक्षा वही जो गैर–बराबरी दूर करे

लक्ष्मण प्रसाद

इस प्रकृति में विशाल महासागर की भाँति विविध तरह की विद्यायें विद्यमान हैं। इसमें जो भी रत्न की खोज में उतरता है उसको कुछ न कुछ अनमोल मोती अवश्य ही हाथ लग जाते हैं । विद्या पर किसी एक का अधिकार नहीं है। प्रकृति की ओर से बिना भेद–भाव के यह सबके लिए उपहार है। आज के दौर में शिक्षा जगत में काफी उथल–पुथल है और गैर–बराबरी बढ़ती जा रही है। इसे

ठीक से समझने के लिए हम शिक्षा को दो भागो में बाँटकर देखते हैं ।

शिक्षा का संगठित स्वरूप

स्कूलों और कालेजों में एक निश्चित स्थान, एक निश्चित पाठ्यक्रम तथा एक निश्चित पद्धति में शिक्षा दी जाती है । आज के दौर में यही प्रतिष्ठित विद्या है। इसी विद्या के विकास और विस्तार के बारे में सरकारी तंत्र लगा हुआ है।

शिक्षा का असंगठित स्वरूप

स्कूल कालेज के बाहर व्यापक समाज में बहुत सारी विद्यायें बिखरी हुई हैं। खेत–खलिहान और बाग–बगीचा, कल–कारखाना इत्यादि जगहों पर ये विद्यायें मौजूद हैं। यहाँ पर काम करने वाले लोगों के पास ज्ञान का विशाल भण्डार है जिसके बल पर उत्पादन की समस्त प्रक्रियाओं को ये संचालित करते हैं। इस विद्या को हम लोकविद्या कहते हैं। समाज में किसानों, कारीगरों, स्त्रियों, और आदिवासियों के पास लोकविद्या की शिक्षा बिना बाहरी मदद के अनवरत जारी हैं ।

विद्या की प्रतिष्ठा

संगठित शिक्षा की प्रतिष्ठा सर्वविदित है। स्कूल–कालेज की शिक्षा को प्राप्त करने में मान–सम्मान, पद, पैसा व प्रतिष्ठा प्राप्त है। स्कूल–कालेज की संगठित शिक्षा हो अथवा व्यापक समाज के पास मौजूद लोकविद्या की शिक्षा हो ज्ञान व विद्या की दृष्टि से समान प्रतिष्ठा की हकदार है।आवश्यकता और सामाजिक महत्व की दृष्टि से लोकविद्या का स्थान ऊपर ही है लेकिन लोकविद्या को प्रतिष्ठा नही है।

गैरबराबरी का सवाल

इस सवाल को ध्यान में रखते हुए जब हम शिक्षा के संगठित स्वरूप पर दृष्टिपात करते हैं तो तस्वीर बिल्कुल साफ हो जाती

है। स्कूली शिक्षा ने गैर–बराबरी को काफी बढ़ाया है। गैर–बराबरी का विभिन्न स्तर अपने ही अन्दर खड़ा किया है। स्कूल–कालेज से शिक्षित व्यक्ति और लोकविद्या से शिक्षित व्यक्ति के बीच बहुत बड़ी खाई पैदा की है।

सभी ज्ञान के बीच बराबरी का आधार

जब हम प्रचलित मान्यताओं, शासन–प्रशासन, राजनीति व ज्ञान पर कब्जा जमाये बैठे तबकों द्वारा थोपे गये मूल्यों से मुक्त होकर चितंन करें तो पूरे आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय के साथ इस निर्णय पर पहुँचेंगे कि इस धरती पर जितने भी उत्पादन व रचना के कार्य हो रहे हैं सब के सब ज्ञान, विद्या व कौशल के बल पर हो रहे हैं। वहाँ पर यह बात गौण़ हो जाती है कि विद्या कहाँ से प्राप्त की गई। अपने करघे पर बैठा कोई बुनकर जब विभिन्न अलंकरण व आलेखन वाला सुन्दर वस्त्र बुनकर तैयार कर रहा हो या नक्काशी करने वाला कारीगर किसी लकड़ी पर सुन्दर चित्र उकेर रहा हो या कुम्हार अपने चाक पर सुन्दर घड़ा गढ़ रहा हो या कोई आदिवासी जंगल से जड़ी बूटी प्राप्त करके स्वास्थ्योपयोगी औषधि का निर्माण कर रहा हो; ये सब ज्ञान के बल पर करते हैं और इन सबके ज्ञान का साक्षी पूरा समाज है। क्या उनसे किसी डिग्री या कागज के प्रमाणपत्र की माँग करना उनके ज्ञान को अपमानित करना नहीं है ? क्या ज्ञान के लिये स्कूल ही आवश्यक है? किसी कला, हुनर व कौशल में दक्ष समाज को गँवार कह कर अपमानित नहीं किया जा सकता। विभिन्न ज्ञान धाराओं के बीच बराबरी को मान्यता मिलें तो आर्थिक रूप में भी इनके बीच बराबरी मानना आवश्यक हो जायेगा। शासन–प्रशासन के पदों पर भी बिना किसी भेद–भाव के इस समाज को योग्य मानकर रखा जाना चाहिए ।

शिक्षा में लोकविद्या समाहित हो

आज की नई–नई कम्प्यूटर, इंटरनेट और मैनेजमेंट इत्यादि की शिक्षा बहुत बड़ी गैर–बराबरी के साथ अवतरित हुई है। कम्प्यूटर का ज्ञान न रखने वाले अज्ञानियों की श्रेणी में खड़े हैं। कमाई के

मामले में भी काफी अन्तर बढ़ता जा रहा है। एक तरफ लोकविद्या धारक समाज के लिए आज की व्यवस्था में कोई जगह नहीं तो दूसरी तरफ उनके खुद के ज्ञान व हुनर को प्रतिष्ठा नहीं। ऐसी स्थिति में लोकविद्या को शिक्षा में समाहित करके ही इस गैरबराबरी को दूर करने का माहौल पैदा किया जा सकता है। लोकविद्या को शिक्षा में कैसे समाहित किया जाय ? इस पर व्यापक चिन्तन, विचार व बहस की आवश्यकता है।

•

ज्ञान के क्षेत्र में उथल–पुथल

चित्रा सहस्रबुद्धे

1- सूचना ही ज्ञान और पूँजी बनी

कम्पयूटर, इंटरनेट और मोबाइल के आ जाने से सूचनाओं का संकलन और संचार (दूर–दूर तक सम्प्रेषण) बहुत तेज गति से होने लगा है। सूचना का संकलन–संगठन–संचार एक बहुत बड़ा उद्योग बन चुका है। दुनिया के एक कोने से सूचनायें उठाकर दूसरे कोने तक संचार माध्यम से ले जाने की क्रियायें मुनाफा कमाने का स्रोत बन चुकी हैं। अब सूचना ज्ञान भी है और पूँजी भी। यह बाजार का निर्माण भी करती है। कम्प्यूटर–इंटरनेट के माध्यम से ई–वार्ता, ई–सम्मेलन, ई–शिक्षा, ई–मनोरंजन, ई–प्रशासन आदि सुविधाओं के मार्फत एक ज्ञान आधारित समाज बनाया जा रहा है। कम्प्यूटर–इंटरनेट केवल एक तकनीक नही है बल्कि एक व्यवस्था है।

यह समझना जरूरी है कि सूचना युग के बदलावों को मात्र 'तकनीकी विकास' के संदर्भ में देखना बड़ी भूल होगी। असलियत यह है कि नये प्रकार के ज्ञान का उदय हो रहा है और यह साइंस को उसके राजगद्दी से हटा रहा है।

2- ज्ञान प्रबन्धन, साइंस और लोकविद्या

सूचना के संगठन के ज्ञान को ज्ञान–प्रबन्धन कहा जा रहा है और इसे सर्वोच्च प्रतिष्ठा मिल रही है। अब धीरे–धीरे शिक्षा के उच्च संस्थानों में साइंस की पढ़ाई कम होती जा रही है और ज्ञान–प्रबन्धन की पढ़ाई को सर्वश्रेष्ठ माना जा रहा है। इंजीनियरिंग के शिक्षण संस्थानों में पाठ्यक्रम बदला जा रहा है। साइंस के कोर्सेस घटाये जा रहे हैं और उनके स्थान पर ज्ञान प्रबन्धन के विषय बढ़ाये जा रहे हैं।

औद्योगिक विकास के दौर (औद्योगिक युग) में साइंस को एकमात्र ज्ञान का दर्जा दिया गया था। सूचना युग इसे नही मानता। साइंस को सर्वोच्च प्रतिष्ठा देने से सूचना युग के विकास में बाधायें खड़ी होती हैं। सूचना युग में साइंस के तर्क व मूल्य के दायरे के बाहर ज्ञान के अन्य प्रकारों से भी सूचना का निर्माण हो रहा है और यह सूचना का एक बहुत बड़ा स्रोत साबित हो रहा है। इसके चलते संगीत, सिनेमा, चित्रकला, वास्तु, तकनीकी, स्वास्थ्य–रक्षा, उद्योग, कृषि, मीडिया आदि सभी क्षेत्रों में सूचना का असीमित भण्डार दिखाई देने लगा है। लोकविद्या को ज्ञान का दर्जा देना पूँजीपतियों की जरूरत बन गई है। सूचना युग के कर्ता–धर्ताओं के द्वारा दुनियाभर की देशी ज्ञान परम्पराओं और लोकविद्या से एक ऐसा रिश्ता कायम करने का अभियान चल पड़ा है जो तिरस्कार पर आधारित न हो जैसा कि साइंस का था। ज्ञान के क्षेत्र में उठी हलचल का यह एक बड़ा कारण है।

3- ज्ञान के प्रकारों में ऊँच–नीच

समाज में ज्ञान कई स्थानों पर संगठित (बँधा) है, जैसे, धार्मिक सम्प्रदायों के पास धर्मों का, विश्वविद्यालयों में साइंस का,

कम्प्यूटर–इंटरनेट में ज्ञान प्रबन्धन का और समाज में लोकविद्या का। ये ज्ञान के प्रकार एक दूसरे से भिन्न हैं। ज्ञान प्रबन्धन इन सभी प्रकार के ज्ञान से सूचनायें एकत्र कर उन्हें कम्प्यूटर में संगठित कर व्यापार के लायक बनाने का ज्ञान है। दूसरे शब्दों में यह सभी प्रकार के ज्ञान को बाँध कर रखने का ज्ञान है। ज्ञान प्रबन्धन का सभी प्रकार के ज्ञानों के साथ ऐसा सम्बन्ध ज्ञान पर कब्जे और उसके शोषण की परिस्थिति बना रहा है साथ ही ज्ञान के क्षेत्र में नये सिरे से ऊँच–नीच पैदा कर रहा है।

•

ज्ञान और खेती

रामजनम

आधुनिक विज्ञान, पूँजी तथा सत्ता के गठजोड़ से आजाद भारत में किसानों के ज्ञान व श्रम के शोषण का खुला खेल शुरू हो गया है। आज किसान का ज्ञान खेती के परम्परागत ज्ञान और कृषि विश्वविद्यालयों का मिश्रित ज्ञान है। किसान ने अपने ज्ञान व श्रम के बल पर आजाद भारत को खाद्य के मामले में आत्मनिर्भर बना दिया है। खाद, बीज, तथा कीटनाशक रसायन आदि के क्षेत्रों में एग्रीकल्चर कालेज की सूचनाओं और कम्पनियों के घुसपैठ के बावजूद भी किसान अपनी खेती अपने ज्ञान के बल पर करता है। ज्ञान के सवाल में किसान और कृषिजीवी समाज के शोषण, बदहाली का राज छिपा है।

कृषि–ज्ञान का पूँजी, सत्ता और समाज से रिश्ता

किसान के ज्ञान के प्रति सत्ता और पूँजी उपेक्षा और तिरस्क्त भाव रखते हैं। सत्ता की ओर से चलने वाली कृषि क्षेत्र की योजनाओं का एक बड़ा हिस्सा झूठ और फरेब का होता है।

पूँजी किसान और उसके ज्ञान को मात्र शोषण के साधन के रूप में देखती है। आधुनिक शिक्षा के संस्थानों में किसान के कृषि ज्ञान को महत्व नहीं मिलने से वृहत समाज में किसान और उसके ज्ञान को कोई प्रतिष्ठा नहीं मिल पाती है। बी 0 एच 0 यू 0 जैसे शिक्षा के उच्च संस्थानों में किसानी के क्षेत्र से आने वाले बच्चों का दाखिला अघोषित रूप से बन्द किया जा रहा है। यदि बाजार के मार्फत किसान की घेरेबन्दी को गौर से देखें तो निम्न बिन्दु उभरते हैं।

- किसान के ज्ञान व उत्पादन का अवमूल्यन
- ज्ञान पर कब्जा तथा व्यापार
- कम्प्यूटर में ज्ञान का संकलन
- ज्ञान का तिरस्कार

➢ **किसान के ज्ञान व उत्पादन का अवमूल्यन**—मूल्य निर्धारण की वर्तमान प्रक्रिया चाहे वह सत्ता की तरफ से हो चाहे गला काट बाजार की तरफ से हो उसमें किसान के ज्ञान, श्रम, तथा लागत को नज़रअंदाज किया जाता है। जब सरकार दिल्ली में बैठकर कृषि उत्पादन का मूल्य निर्धारित करती है तो उस समय दिल्ली के पास बैठे किसान नेता चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत या अन्य किसान प्रतिनिधियों से एक बार भी नहीं पूछती, उनकी सलाह नहीं लेती। पूछा उनसे जाता है जो किसान के ज्ञान को ज्ञान ही नहीं मानते हैं। इसकारण मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया पर किसान का कोई नियंत्रण नहीं है।

➢ **ज्ञान पर कब्जा और व्यापार**—नया पेटेन्ट कानून, नया बीज कानून आदि के चलते कम्पनियाँ कृषि क्षेत्र के ज्ञान पर एकाधिकार करना चाहती हैं। जिस ज्ञान पर कम्पनियाँ अपने अनुसंधान के मार्फत दावा करती हैं वह ज्ञान कृषि की ज्ञान परम्परा में मौजूद होता है। उसका प्रयोग कम्पनियाँ किसान को बिना मूल्य दिये किसानी या अन्य कृषि क्षेत्रों में करती हैं। सरसो का उत्पादन करने वाला

किसान और उसका भाई जो तेल घानी से तेल उत्पादित करता है, आज कम्पनियों के नियंत्रण वाली बाजार व्यवस्था के शिकार हैं और तेल बिक्री के रास्ते उनके लिये बन्द किये जा रहे हैं।

- **कम्प्यूटर में किसान के ज्ञान का संकलन**—भारत जैसे वनौषधि वाले देश में आदिवासी और किसान तरह–तरह के पेड़, पत्तों, जड़ी–बूटियों के औषधि गुणों को जानते और पहचानते हैं। आज उनके ज्ञान को कम्प्यूटर में संकलित और संग्रहित किया जा रहा है। कम्पनियों द्वारा संकलित इस ज्ञान से हमारी ही वनौषधियों की हम ही से बेरहमी के साथ कीमत वसूलने का नया तन्त्र विकसित किया जा रहा है।

- **किसान के ज्ञान का तिरस्कार**—आधुनिक विज्ञान के विकास की बुनियाद वृहत समाज के ज्ञान के तिरस्कार पर टिकी है। हवा, पानी, मिट्‌टी तथा बीज आदि का ज्ञान कृषि क्षेत्र के समाजों के पास परम्परा से रहा है। आधुनिक विज्ञान द्व ारा इस ज्ञान के तिरस्कार के चलते जल संकट तथा जमीन से उर्वरा शक्ति का क्षरण जैसी समस्याएं कृषि क्षेत्र में उत्पन्न हो रही है। आधुनिक विज्ञान के प्रतिष्ठित ज्ञान के वर्चस्व के चलते मनुष्य समाज के जीवन और मूलभूत जरूरतों का संकट पैदा हो गया है । कृषि–ज्ञान के शोषण, उसपर कब्जा और उसके व्यापार में सत्ता तथा समाज का प्रतिष्ठित तबका लूट मचाने वाली कम्पनियों के साथ खड़ा है। कृषि ज्ञान की मुक्ति का रास्ता शिक्षा और बाजार से होकर निकलता है। आज जरूरत है ज्ञान के शोषण, लूट, व्यापार, तिरस्कार, तथा कब्जे का पर्दाफाश करने की और ज्ञान मुक्ति के नये रास्ते खोजने में सहयोग करने की ।

●

15

ज्ञान और उद्योग

लक्ष्मण प्रसाद

समाज का बड़ा हिस्सा गाँव, कस्बों में स्थानीय उद्योग में भागीदारी का ज्ञान रखता है। खेती के अलावा हस्तकरघा, कालीन ,चमड़ा , प्लास्टिक , में भी बहुजन समाज अपने ज्ञान को लगाकर उत्पादन में भागीदारी करता है। इसी तरह कृषि उत्पाद में भी आटा चक्की, तेल घानी, गन्ने से गुड़ वगैरह का ज्ञान और उस पर आधारित उद्योग तो समाज में रहा ही है। फर्नीचर, लोहा, मिट्टी के बर्तन, फल संरक्षण मूर्तिकला, काष्ठ कला, समुद्र से नमक बनाने आदि का ज्ञान और उद्योग समाज में हैं। भौगोलिक स्थिति व जलवायु में विविधता के चलते यहाँ पर विविध तरह के ज्ञान और उद्योग के कारीगर हैं, लोकविद्याधर हैं। इसलिए यहाँ कच्चे माल का ज्ञान और उस पर आधारित उद्योग की वृहत उपलब्धता है। इन उद्योगों में काम करने वालों की समझ काफी अधिक है। इनमें अपने भौगोलिक परिवेश व प्रकृति प्रदत्त कच्चे माल के स्रोत व उसकी गुणवत्ता का अद्भुत ज्ञान है। कच्चे माल को उपयोग योग्य बनाने के लिए आवश्यक हुनर, वस्तुओं का स्वरूप, इस प्रक्रिया में लगने वाले उपकरण की समझ व मरम्मत की जानकारी कारीगरों के पास विद्या के रूप में विद्यमान रहती है, जिसे सीखने में उसका परिवार जन्म से लगता है।

हुनर या कारीगरी सीखने में सहजता से लेकर भाईचारा का निर्माण, अच्छी गुणवत्ता, रोजगार एवं स्वास्थ्य सभी दृष्टि से लघु उद्योग लोकहित पक्ष प्रस्तुत करता है। भौतिक पदार्थों की पूर्ति के साथ–साथ आत्मीयता, सहयोग और सम्मान की पूर्ति भी यही समाज करता है। पूँजीवाद ने लोकविद्या धारक समाज पर बहुत बड़ा प्रहार किया है, इन सभी उद्योगों को अलाभकारी बनाया है। अत्याधुनिक तकनीकी का प्रयोग करके करोड़ों रूपये में कम्प्यूटर से लैस लूम व मशीनें प्रतिदिन हजारों मीटर कपड़ा बुन देती हैं। इसको भी पूँजीपतियों ने हथिया रखा हैं। लेकिन 21वीं सदी में अब

कम्प्यूटर–इन्टरनेट के आने के बाद से बड़े–बड़े कारखाने भी टूट रहे हैं। बम्बई और अहमदाबाद के कारखानें बन्द हो चुके हैं। कारीगरों की रोजी–रोटी का क्या होगा इसकी चिन्ता किसी को नहीं। इस समाज का बौद्धिक संसाधन, यानि लोकविद्या बेकार हो जाय इसकी भी चिन्ता नहीं। वह समाज जिसके पास कच्चे माल का ज्ञान है, हर किस्म के कच्चे माल की गुणवत्ता का ज्ञान है, वह पूँजीवाद में मजदूर मात्र है। उद्योग का सम्बन्ध, सरकार की औद्योगिक नीतियों से है। यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि सरकार कारीगरों और स्थानीय उ़द्यमियों के प्रति बिल्कुल उदासीन है। इस समय हथकरघा उद्योग से लगायत सभी उद्योग या तो उजड़ रहें हैं अथवा लाभ देने की स्थिति में नहीं हैं। कारीगर, बेरोजगारी, आर्थिक तंगी और भूखमरी के शिकार हैं। बहुजन समाज के ज्ञानधरों के साथ सरकार का व्यवहार सौतेला है ऐसे में इनके विद्य ा और हुनर का अपमान नहीं होगा तो क्या होगा ? सरकार की जिम्मेदारी बनती है कि हुनरमंद लोगों को पहचानने उन्हें अधिक से अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने तथा उनके अनुकूल माहौल का निर्माण करे। प्रौद्योगिकी संस्थानों में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करे ।

ज्ञान पर कब्जा करके जिस तरह से कारीगरों व छोटे–मोटे कारोबारियों को शोषित करने का कार्यक्रम चल रहा है उससे मुक्ति के लिए जन–जागरण का कार्य आवश्यक है। कारीगरों के ज्ञान की प्रतिष्ठा के बिना उनकी गरीबी को मिटाने का रास्ता नही खुलता। जन–जागरण के मार्फत ही इस मुद्दे को भी सार्वजनिक बहस में लाया जा सकता है। बाजार पर नियन्त्रण के लिए स्थानीय बाजार की बहस और आन्दोलन की रूपरेखा बनानी होगी। घर–घर में उद्योग हो इस बात को भी राजनैतिक बहस में लाना होगा। नौजवानों, जन–जागरण महायज्ञ के लिए कमर कसकर तैयार हो जाओ।

•

17

ज्ञान और नये उद्योग

अविनाश झा

नये उद्योगों में सांस्कृतिक उद्योग बहुत बड़ा उद्योग बन गया है। सूचना, संचार, मीडिया और इन्टरनेट उद्योग इन नये उद्योगों में आते हैं। कम्प्यूटर के आने के बाद से नये किस्म के रोजगार के अवसर खुले हैं। काल सेन्टरों में लड़के बड़ी तेजी से भरे जाते हैं। जो लड़के अंग्रेजी बोलने में ठीक होते हैं उन्हें काल सेन्टर में सेवा के अवसर मिलते हैं। वाराणसी के बारे में तो मैं नहीं कह सकता लेकिन दिल्ली में काल सेन्टरों का बड़ा बोलबाला है। काल सेन्टर आदमी की दिनचर्या बन गई है। ज्यादातर कम्पनियों को एक ऐसा लड़का चाहिए जो उपभोक्ता की शिकायत सुनकर उसे आश्वस्त कर दे कि उनकी शिकायत सुनी गयी है। अब वे घबरायें नहीं, उनकी सेवा में सेवक उपस्थित हैं, दिक्कतें जल्दी ही दूर कर दी जायेंगी। इस तरह का एक आदमी हर समय ग्राहक को आश्वासन देने के लिए बैठाया जाता है। काल सेंटरों के कार्यकर्ताओं को आठ से बारह हजार तक की तनख्वाह मिलती है। जो काम अमेरिका में कराने का ज्यादा पैसा देना पड़ता है वह यहाँ के लोगों के द्वारा अत्यधिक सस्ते में हो जाता है।

नया विभाजन

कहा यह जा रहा है कि कम्प्यूटर–इन्टरनेट के आ जाने के बाद से समाज नये सिरे से विभाजित हो रहा है। समाज का एक छोटा हिस्सा कम्प्यूटर–इन्टरनेट पर काम करता है और बहुत बड़ा हिस्सा कम्प्यूटर–इन्टरनेट पर नहीं है। जो बड़ा हिस्सा है उनमें किसान, कारीगर, मजदूर आदि हैं। दन दोनों हिस्सों के बीच दूरी बहुत ज्यादा है।

पढ़े–लिखे लोग ज्ञान की भूमिका में नई चीजें गढ़ रहे हैं। इसलिए ज्ञान की मुक्ति का अर्थ क्या है ? यह सोचना है। आज जो नये–नये उद्योग बन रहे हैं ये ज्ञान के नये प्रतिमान भी गढ़ रहे हैं। हमारे सामने सवाल यह है कि सूचना उद्योग, संचार उद्योग,

मीडिया उद्योग, इन्टरनेट उद्योग आदि इन नये उद्योगों में लोकहित पक्ष से किस किस्म के ज्ञान की जरूरत है ? नई तकनीक या नये ज्ञान की समीक्षा का अधिकार सबको है और इसकी समीक्षा करने की काबिलियत भी हर आदमी में है। इसे करने का माहौल बनाना जरूरी है। यह समीक्षा आम आदमी के द्वारा या किसान, कारीगर जैसे समाजों द्वारा जब तक नही होगी तब तक नई तकनीक या नये ज्ञान का लोकहितकारी पक्ष प्रबल नही होगा। ऐसे युवा ज्ञान शिविर इसके लिये माहौल बनाने का काम कर सकते हैं।

सुनील सहस्रबुद्धे ने इसमें जोड़ा कि काल सेन्टरों में रोजगार पाने के लिए नवयुवकों के ठगी का सिलसिला बहुत ज्यादा चल रहा है। इंगलिश स्पीकिंग पढ़ाने वाले लोग बच्चों को काल सेन्टर में नौकरी दिलाने के बहाने और देश–विदेश सेवा में अच्छी कमाई का लालीपाप दिखाकर मोटी रकम हथियाने में लगे हैं। इस तरह की ठगी की कई घटनायें आये दिन आस–पास सुनने को मिलती हैं। 'सर ने पैसा लेकर दिल्ली भेज दिया और वहां काम का तरीका ठीक नहीं लगा।' अथवा 'बिना कारण के कोई गलती दिखाकर सेवा से बाहर कर दिया गया और लौटने का भाड़ा तक नहीं मिला।' कहीं छोटा–मोटा काम करके भाड़ा जुटाकर युवाओं को घर आना पड़ा ऐसा भी हो रहा है। इन उद्योगों में लोकहित कहाँ है ? ये समाज में नया विभाजन पैदा कर रहे हैं।

●

19

ज्ञान और मीडिया

दिलीप कुमार 'दिली'

1. मीडिया का वर्तमान स्वरूप – अर्द्ध चेतन मीडिया

- सूचनाओं का व्यापक जन–संचार–मीडिया के मार्फत खबरें–सूचनायें घर–घर बूढ़े–बच्चों–महिलाओं तक सबमें पहुँच गई हैं। लोगों के चाहत की खबर और मनोरंजन के विषय, अखबार, रेडियो, दूरदर्शन, इंटरनेट, कम्प्यूटर में भले न मिले, फिर भी उसके सम्पर्क की लत छूटती नहीं। लाख मनहूस अपसंस्कृति वाले कार्यक्रम होने के बावजूद लोगों की माँग के बहाने मनमाने दृष्य परोसे जाते हैं। जनता मीडिया में लोकहित संवेदना के ज्ञान की जिज्ञासा लेकर सम्पर्क में रहती है। लोगों की चाहत की समझ दर्शाती है कि मिडिया बौद्धिक सत्याग्रह से लैस हो और लोकज्ञान की सहज कला को उच्च कला में पहुँचाने का महत्वपूर्ण स्थान बने।
- एकतरफा संप्रेषण–दृष्य–श्रवण माध्यम से मीडिया अनपढ़ के भी सम्पर्क में आ जाता है। लेकिन यह एकतरफा है। लोकगीत, लोक–कथा को भी सूचना संचार में प्रतिष्ठाजनक प्रस्तुति के दरवाजे तो खुल जाते हैं लेकिन लोक का दर्द नही आता। पूँजी और राज्य के साथ ताल मिलाने की गुलामी के बावजूद मीडिया ज्ञान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है। आलोचना के अलावा मीडिया, कला, ज्ञान–विज्ञान, खेल, देश–विदेश, गाँव, महिला, बूढ़े बच्चे जवान हर क्षेत्र और हर तरह के लोगों की पहुँच में आ जाने से नये तरह की शिक्षा और रोजगार का बड़ा स्थान बन गया है।

2. वर्तमान मिडिया का विकल्प–(बौद्धिक सत्याग्रही सचेतन मिडिया)

- **स्थानीय भागीदारी हो–अंग्रेजी के अलावा हिन्दी, भोजपुरी अथवा अन्य क्षेत्रीय लोक ज्ञान, लोक भाषा, सहज–साहित्य, कला, दर्शन, खेल के मार्फत स्थानीय समाज की भागीदारी हो यानि बड़ी संख्या में स्थानीय लोग मीडिया में हो।**

गाँव–गाँव में मीडिया स्कूल हो ताकि स्थानीय समाज की नई शिक्षा व रोजगार में हिस्सेदारी बने। जन संचार माध्यम में रोजगार के अवसर बढ़े हैं। लेकिन ज्यादातर मीडिया संस्थान महँगे हैं। बहुत से निजी मीडिया संस्थान मीडिया–ज्ञान की शिक्षा देना शुरू कर दिए हैं। अच्छी कमाई के साथ रोजगार के व्हत अवसर के दरवाजे खुल रहें हैं। गाँव में शिक्षा अभियान लोगों को शिक्षित तो कर देगा परन्तु रोजगार के नये अवसर मीडिया–उद्य ोग और मीडिया–ज्ञान की शिक्षा से स्थानीय समाज वंचित रह जायेगा। और मिडिया में स्थानीय समाज की दखल न होने से लोक भाषा, लोक ज्ञान, सहज साहित्य दर्शन के मार्फत समाजिक विषमता और गरीबी दूर करने वाला समाज के अन्तिम आदमी तक खुशहाली के लक्ष्य का दर्शन प्रस्फुटित नहीं होगा। दरिद्र नारायण से जन सम्पर्क कर राहत देने वाला राज्य का दावा खोखला रह जायेगा। इसलिए सरकार के सामने देश का नौजवान शिक्षा और रोजगार का हवाला देते हुए लोकहित पक्ष रखने वाला रोजगार परक मिडिया स्कूल गाँव–गाँव में होना चाहिये। कम्प्यूटर हिन्दी के साथ–साथ स्थानीय भाषा में विकसित कराया जाना चाहिये।

- **स्थानीय उद्यमिता बढ़े– परिवर्तन के इस नये दौर में मीडिया सत्ता और पूँजी के कब्जे में है और किसान, कारीगर, मज़दूर के लोकहित में होने वाले आन्दोलन व अभियानों के दर्शन को गुमराह कर रहा है। वर्तमान मीडिया लोगों के ज्ञान को, लोक–सूचना को माल की तरह इस्तेमाल करके बिकाऊ बनाता है। लोग ही जिसके खरीददार होते हैं। मीडिया लोगों के ज्ञान पर आधारित**

एक महत्वपूर्ण उद्योग बन गया है। मीडिया उद्योग में स्थानीय उद्यमियों का दखल ही इस स्थिति को बदल सकता है।

3. वैकल्पिक विकास के लिए मीडिया

- **वैकल्पिक विकास क्या है ?**

घर–घर में उद्योग हो, शिक्षा सस्ती हो, सामाजिक विषमता और गरीबी दूर हो, पूँजी का बहाव गाँव–कस्बों की ओर हो, किसान, मज़दूर, कारीगर आदि लोक–ज्ञानधर के लिये ज्ञान व श्रम की सम्मानजनक रोटी हो यह वैकल्पिक विकास है। इसलिये ये सब मिलकर बहुजन समाज के ज्ञान को मदद पहुँचाने का लक्ष्य रखते हैं।

वैकल्पिक विकास की राह में मीडिया की भूमिका सूचना–संचार को संगठित कर लोकहित में परिवर्तन को सम्भव बनाना है।

वैकल्पिक विकास में मीडिया का मूल्य हैं लोकज्ञान, लोकभाषा, सहज साहित्य दर्शन को राज्य एवं पूँजी के निजी कब्जे और शोषण से मूक्ति दिलाना और परिवर्तन के ज्ञान के दर्शन को प्रतिष्ठा देना।

अतीत के गर्भ में पलता है एक नया समाज ।
पीछे के इतिहास में देखें, बदला है कल कितना आज ।।

ज्ञान पर कब्जा होता है , निजी पूँजी बढ़ाने को
राज्य से जनता लड़ती है , जीने का हक पाने को
अलग–अलग संघर्ष में बदलाव ज्ञान का सहज रिवाज ।
परिवर्तन के ज्ञान के दर्शन का मीडिया में समावेश हो आज ।।

●

नये उद्योगों के बारे में कुछ सवाल

संतोष कुमार संविज्ञ

क्या कम्प्यूटर–इन्टरनेट युवकों के सामने रोजगार की सम्भावनायें खोल रहा है या बेरोजगारी बढ़ा रहा है? यह लोकहित में है या नहीं ? है तो कैसे ? कम्यूटर की शिक्षा महँगी रही है या सस्ती और यह कहाँ मिलती है? सरकारी संस्थानों में या प्राइवेट संस्थानों में ? यह शिक्षा युवाओं को मजदूर बना रही है या कारीगर ? वस्तुओं के उत्पादन की जानकारी तो हमें थी सूचना का उत्पादन क्या होता है और इन दोनों के बीच क्या सम्बन्ध होगा ? कम्प्यूटर की शिक्षा महानगरों , नगरों या कुछ छोटे नगरों के आस–पास ही काफी घनत्व के रूप में फैल रही है। यहीं पर कुछ रोजगार भी मिल रहे हैं। मिला–जुलाकर जहाँ–जहाँ आधुनिक विकास हुआ है कम्प्यूटर की शिक्षा और रोजगार भी वहाँ पर बहुत ज्यादा है। इस कारण नये तरह के क्षेत्रीयतावाद की समस्या जन्म ले रही है। इन सारे प्रश्नों पर चर्चा करना और इन मुद्दों पर स्पष्टता हासिल करना ही इन युवा ज्ञान शिविरों का उद्देश्य है।

शिक्षा का महंगा होना और बहुजन समाज के उत्पादन को लाभकारी मूल्य न मिलना ज्ञान को बाँधना या कैद करना ही है, यानि ज्ञान को लोगों की पहुँच से दूर करना है। ज्ञान कैद है विश्वविद्यालयों में, ज्ञान कैद है कम्प्यूटरों में। लोकविद्या लोगों के बीच सर्वसुलभ होती है, उस पर किसी कम्पनी या सरकार का नियंत्रण लोकविद्या को कैद करने का एक तरीका है। ज्ञान मुक्ति मंच ज्ञान को कैद से मुक्त कर सब लोगों के लिये ज्ञान के मुक्त इस्तेमाल का हिमायती है। हम युवाओं से अपील करते हैं कि वे इस अभियान में शामिल हो।

•

23

लोकविद्या (ज्ञान) के संगठन और नवीनीकरण के नये स्थान

चित्रा सहस्रबुद्धे

लोकविद्या ज्ञान का वह प्रकार है जो किसी एक पुस्तक, संस्था या सम्प्रदाय में कैद नही है। यह समाज में बिखरा ज्ञान है। ज़रूरत के लिये यह सबको सहज उपलब्ध है। समाज के लोग किसी सरकार, संस्था अथवा विशेषज्ञों के बिना ही अपने अनुभव, ज़रूरत और विवेक के बल पर इसका निर्माण, विकास और नवीनीकरण करते हैं। लोकविद्या के निर्माण की क्रिया एक सामाजिक क्रिया है और सामाजिक मूल्यों को अपने में समाहित करती है। मुख्यतः किसान, कारीगर, महिलायें, आदिवासी और छोटे दुकानदार लोकविद्या के स्वामी हैं।

लोकविद्या किसी ज्ञान, अन्दरूनी या बाहरी को नकारती नही है बल्कि उसे लोकहित में रचने का आग्रह रखती है। वह साइंस को नकारती नही, वह कम्प्यूटर को नकारती नही, वह इंटरनेट को नकारती नही या मोबाइल को नकारती नही है, बल्कि हर नये ज्ञान को सर्वलोकहित की कसौटी पर जाँचने का आग्रह करती है और लोकहितकारी गुणों को ही समाज के ज्ञान में स्थान और मान्यता देती है। हर नये ज्ञान के लोकहितकारी मूल्यों को आत्मसात करने के लिये वह सदैव तैयार रहती है। किसी समाज के सर्वांगीण प्रगति के लिये ऐसे ही ज्ञान की आवश्यकता होती है।

लोकविद्या यानि परम्परागत ज्ञान नही है, अथवा पिछड़ी और असामयिक विद्या नही है। लोकविद्या का एक महत्वपूर्ण गुण है कि धरती पर जो भी है उसे सर्वलोकहित में इस्तेमाल करने की विधा को ही ज्ञान की मान्यता देना। स्थान और काल के अनुरूप लोकविद्या निरंतर खुद को इस प्रकार नवीन करती है कि यह गुण प्रखर बना रहे। यही वजह है कि किसान, कारीगर और आदिवासी

समाज तमाम विपरित परिस्थितियों में भी समाज को जिन्दा रखता रहा है। ये समाज सतत अपनी विद्या को नवीन करते रहते हैं।

सवाल यह है कि आज की स्थितियों में लोकविद्या किसतरह लोगों की ताकत बनें ? खेती खत्म की जा रही है, उद्योग टूट रहे हैं, छोटे धन्धें उजाड़े जा रहे हैं, ऐसे में इन समाजों की विद्या, लोकविद्या की ताकत कैसे और कहाँ दिखाई देती है ? यानि वैश्वीकरण और सूचना–संचार प्रौद्योगिकी के फैलते जाल के नतीजतन टूटते रोजगार के दौर में वे कौन–से स्थान या क्षेत्र हैं जहाँ लोकविद्या के नवीनीकरण की क्रियाओं को देखा जा सकता है और लोकविद्या की ताकत पुनर्स्थापित की जा सकती है। दूसरे शब्दों में वे क्षेत्र जहाँ लोकविद्या समाज के शोषण के खिलाफ स्वर को मुखर करने का एक प्रमुख आधार बनती दिखती है उनकी पहचान करना आवश्यक है। इसके लिये ज्ञान मुक्ति मंच चार क्षेत्रों की पहचान करता है। ये क्षेत्र इसप्रकार हैं––शिक्षा, बाजार, इंटरनेट और मिडिया। ये चारों स्थान नये बन रहे ज्ञान आधारित समाज के निर्माण के प्रमुख स्तंभ हैं और इन चारों क्षेत्रों में लोकविद्या की प्रबल उपस्थिति है। ऐसे में लोकविद्या इन स्थानों पर सर्वलोकहित में कोई पहल ले सकने की स्थिति में हो सकती है और एक प्रभावी चुनौती खड़ी करने की हैसियत में दिखाई देती है। लोकविद्याधारक समाज के युवाओं को आगे बढ़कर इस चुनौती को आकार देना है। युवा ज्ञान शिविरों में इस पर चिंतन होना चाहिये।

ज्ञान मुक्ति मंच की ओर से आवाहन

किसानों , कारीगरों और मजदूरों के घरों के नौजवानों उठो !

ज्ञान पर अपना दावा पेश करो।

पूँजीपतियों और प्रबन्धकों के कब्ज़े से ज्ञान को मुक्त करो।

एक नई दुनिया बनाने का सपना देखो, ज्ञान पर आधारित, शोषण से मुक्त दुनिया।

हुक़्मरानों से कहो कि वे जनता के प्रतिनिधि हैं, जनता के लिये काम करें, कुर्सी और दौलत की होड़ में न पड़ें।

उनके सामने अपनी माँगें पेश करो।

1. कम्प्यूटर हिन्दी में हो।
2. गाँव–गाँव में मीडिया स्कूल हो।
3. घर–घर में उद्योग हो।
4. स्थानीय बाजार को संरक्षण हो।
5. लोकविद्या शिक्षा में शामिल हो।
6. उच्च–शिक्षा के दरवाजे सबके लिये खुले हों।

15 अगस्त 2007 को अपनी आजादी के 60 साल पूरे हो रहे है। यह आजादी की हीरक जयंती है। हीरे जैसा क्या चमक रहा है? लाखों की फीस वाले इंजीनियरिंग और मेडिकल कालेज, नये मॉल बाजार और पूँजीपतियों के घरानें चमचमा रहे हैं। नफ़े की धूम है। करोड़ों की तनख़्वाह देने वाली कम्पनियाँ हैं, कम्प्यूटर–इंटरनेट और अंग्रेजी के जरिये ज्ञान पर कब्ज़ा है। ज्ञान के शोषण का एक पूरा का पूरा तंत्र–मंत्र बन रहा है। उठो! नौजवानों, ज्ञान पर कब्ज़े को चुनौती दो।

विश्वविद्यालय व महाविद्यालय सरकारी जमीनों पर बने हैं और सरकारी अनुदान पर चलते हैं। वे जनता की सम्पत्ति हैं। वहाँ शिक्षा पाने का अधिकार सभी को है। अंग्रेजी, दर्शन, कला और समाज विज्ञान के विभाग हमारी गुलामी के दस्तावेज़ लिखते है। उच्च शिक्षा को ज्ञान के ठेकेदारों के कब्ज़े से मुक्त करो। पढ़ते भी वही हैं, खेल भी वही खेलते हैं, कला और संस्कृति के अगुआ भी वही बने हुये हैं। हम क्या गाँव के ऊसर पर क्रिकेट खेलने के लिये पैदा हुये है? क्या हमारे भविष्य में यही लिखा है कि रोज़ 50 किलोमीटर साइकिल चलाकर दूसरों के यहाँ काम करने जायें? और अंत में एक दिन हताश होकर आत्महत्या कर लें? भूखों कोई नही मरता, उसे भूखों मारा जाता है। मूर्ख या अज्ञानी कोई नही

होता, उसे मूर्ख और अज्ञानी करार दिया जाता है। दूर–दराज के गाँवों में हर उद्योग के कार्यस्थल पर एक–से–एक जानकार और हुनरमंद पाये जाते है। कला और भाषा के जादूगर विश्वविद्यालयों में नही बल्कि उन गाँवों और बस्तियों से आते हैं जिनकी ज़िन्दगी विश्वविद्यालयों के लिये अध्ययन की वस्तु मात्र है। प्रकृति में शायद ऐसी कोई क्रिया न हो जिसके जानकार हमारे बीच न हो। ये सब तब तक मूर्ख और अज्ञानी कहे जायेंगे जब तक ज्ञान पर पूँजीपतियों और निहित स्वार्थों का कब्ज़ा रहेगा।

ज्ञान मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। ज्ञान से ही मानवीय गुणों की प्रतिष्ठा होती है और ज्ञान से ही समाज चलता है। लेकिन यदि ज्ञान पर निहित स्वार्थों का कब्ज़ा हो जाय और यदि ज्ञान प्रबन्धकों के हाथ की कठपुतली बन जाय तो उसके शोषण के रास्ते खुलते है, सामाजिक मूल्यों में गिरावट आती है, बृहत समाज में विपन्नता आती है और समाज दो हिस्सों में बँट जाता है। एक ओर ज्ञान पर कब्ज़े की पूँजी की दुनिया होती है तो दूसरी ओर लगभग सब लोग। ज्ञान की मुक्ति ही मनुष्य की मुक्ति का रास्ता है। 21वीं सदी के नौजवानो को यह ऐतिहासिक चुनौती उठानी है।

हम ज्ञान मुक्ति मंच की ओर से युवाओं को अपील करते हैं कि वे अपने गाँव में ऐसे युवा ज्ञान शिविर आयोजित करने की पहल लें और अपने भविष्य को अपने हाथों से सँवारने के लिये कमर कस लें।

ज्ञान मुक्ति मंच, विद्या आश्रम, सारनाथ, वाराणसी

विद्या आश्रम

सा 10/82 ए, अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी–221007

फोनः 0542–2595120, web site: vidyaashram.org

विद्या आश्रम की मूल मान्यता यह है कि जब तक ज्ञान की गतिविधियों में पूरा समाज नही शामिल होता और जब तक लोकविद्या को उत्कृष्ट ज्ञान की प्रतिष्ठा नही मिलती तब तक बराबरी और भाईचारे का गरीबीमुक्त समाज नही बनाया जा सकता। स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर इस विचार की

स्थापना और सघन जनसम्पर्क व रचनात्मक कार्यों के मार्फत इसे लोकहित की कसौटी पर जाँचने के कार्य विद्या आश्रम से होते हैं।

विद्या आश्रम की समझ

1. कम्प्यूटर, इंटरनेट और मोबाइल ज्ञान और सूचना की एक नई दुनिया बना रहे हैं।
2. निजीकरण और मॉल–बाजार इस दुनिया की आर्थिक बुनियाद बना रहे हैं।
3. शिक्षा का विद्या के साथ सम्बन्ध ढीला हो रहा है और अब शिक्षा केवल नये धनाढ्यों के लिये सेवक तैयार करने का जरिया बन रही है।
4. कला में विद्या अथवा साधना का रूप न देखकर उसे केवल मनोरंजन का साधन बनाया जा रहा है।
5. मीडिया इस दुनिया को बनाने के एक प्रमुख साधन के रूप में उभर रहा है और दावा कर रहा है कि वह खुद विद्या का एक स्थान है।
6. सत्तर फीसदी जनता बेहाल है। किसान, कारीगर और छोटे–छोटे दुकानदार उजड़ रहे हैं और मज़दूरी में लगातार गिरावट आ रही है।
7. राजनीति और दर्शन अपने ज्ञान–आधारों से विमुख हो गये हैं और या तो इस दौर में शामिल हो गये हैं या फिर तत्काल की समस्याओं से राहत दिलाने में जुटे हैं।
8. किसान और कारीगर अपने–अपने उत्पादन कार्यों का विस्तृत ज्ञान रखते हैं। महिलायें खेती और पारिवारिक उद्योगों में बराबर की भागीदार हैं व उनकी अच्छी जानकारी रखती हैं। बच्चों के लालन–पालन, घरेलू शिक्षा और प्राथमिक उपचार की वे सबसे अच्छी जानकार मानी जाती हैं। आदिवासियों के वनों–वनस्पतियों और जानवरों के बारे में ज्ञान का लोहा जंगल विभाग वाले भी मानते हैं। छोटी दुकान, गुमटी, ठेला व पटरी पर छोटा धन्धा करने वाले लोग अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रबन्ध की दक्षता रखते हैं। इन सभी लोगों की इन विद्यागत क्षमताओं की समाज में पहचान बहुत धुंधली है। लोकविद्या की उचित पहचान समाज को अभूतपूर्व गति दे सकती है।

कार्य

1. ज्ञान के क्षेत्र में लोकोन्मुख ऊर्जा का संचार करना।
2. ज्ञान और उस पर आधारित गतिविधियों को ज़मीनी बनाना।
3. ज्ञान को पूँजीपतियों, कम्पनियों व नियंत्रणकारी नियम–कानूनों से मुक्त करने का अभियान चलाना।

4. **लोकवि**द्या के विचार का प्रचार व प्रसार करना तथा लोकविद्या की सामाजिक प्रतिष्ठा के लिये कार्य करना।
5. शिक्षा, कला, बाजार और मीडिया के क्षेत्रों में विद्या के सवाल पर बहस खड़ी करना।
6. ज्ञान को मुक्त करने व लोकविद्या के पक्ष में इंटरनेट पर बहस चलाना।
7. किसानों, कारीगरों, आदिवासियों, महिलाओं व छोटा धन्धा करने वालों के ज्ञान की सामाजिक पहचान बनाना।

कार्यक्रम

इस वक्त विद्या आश्रम निम्नलिखित कार्यक्रम चला रहा है।

1. भाईचारा विद्यालय

- सारनाथ के क्षेत्र में कुछ गाँवों में शाम के समय गरीब वर्गों के बच्चों को पढ़ाने का काम होता है। उनकी क्षमताओं के विकास के लिये खेलकूद, कथा–उत्सव, गीत–उत्सव आदि को पढ़ाई में शामिल किया गया है।
- इन विद्यालयों से उस गाँव के और आसपास के ग्रामवासियों के साथ विद्या–वार्ता चलाई जाती है। उनका विश्वास उनकी अपनी विद्या में बढे और उसे वे अपनी शक्ति और संगठन के आधार स्रोत के रूप में देखे इसका प्रयास किया जाता है।

2. चिंतन ढ़ाबा

आश्रम के सामने सड़क के किनारे एक चिंतन ढाबा चलाया गया है। यहाँ एक चाय की दुकान है। ढाबे पर पत्र–पत्रिकायें पढ़ने के लिये रखी रहती है। रोज शाम को आश्रम के कार्यकर्ता ढाबे पर आने वाले लोगों के बीच वैचारिक चर्चायें करते हैं। आसपास के काफी लोग इन चर्चाओं में भाग लेने बराबर आते हैं। पास के ग्रामीण क्षेत्रों में उपयुक्त ढाबों को चिंतन ढाबों में तब्दील किया जा रहा है।

3. ज्ञान मुक्ति मंच

शिक्षा के निजीकरण और ज्ञान पर पूँजीपतियों के कब्ज़े के खिलाफ यह एक अभियान है। इस अभियान का मुख्य औजार युवा ज्ञान शिविर है। शिक्षा, कम्प्यूटर, साइंस, लोकविद्या, उद्योग, मीडिया, बाजार और कम्पनियों तथा सरकार सबके बीच सम्बन्धों पर चर्चा और नौजवानों के लिये दूरगामी रास्तों पर चर्चा यही इन शिविरों के मुख्य विषय है। आश्रम पर, चिंतन ढाबे पर और गाँवों में ये शिविर आयोजित होते रहते हैं।

4. ज्ञान संवाद

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर तथा इंटरनेट के माध्यम से आश्रम सामाजिक सरोकार रखने वाले बुद्धिजीवियों के बीच लोकविद्या दृष्टिकोण से एक ज्ञान संवाद चलता रहता है।

5. प्रकाशन

लोकविद्या संवाद और ज्ञान की राजनीति पुस्तकमाला आश्रम के अभी तक के प्रमुख प्रकाशन हैं। अंग्रेजी में Knowledge in Society के नाम से व्यापक भागीदारी पर आधारित पुस्तिकायें प्रकाशित की गई हैं। इनके अलावा विभिन्न कार्यक्रमों में पर्चे प्रकाशित किये जाते है।

•